Jhala Manna

Jhala Mann Singh (Jhala Manna) was one of the Mewar nobles of a Rajput Clan of Bari Sadri. The Bari Sadri jagir was given by Maharana Raimal to predecessors of Jhala Manna, Shri Ajja and Shri Sajja. Jhalas of Bari Sadri retained the honor of standing in for their prince whenever the need arose.

Jhala Manna took part in Maharana Pratap Singh's war council at Gogunda (1576) prior to the Battle of Haldighati. When Chetak was wounded at the battle and Maharana Pratap, also severely wounded, had to retire from the field, Jhala Manna donned the Maharana's tunic and took charge of the Mewar forces. He died in the ongoing battle.

Seeing the attack of Rana Pratap on 'Saleem' (later Jahangir) in the war, numerous Mughal soldiers surrounded Maharana Pratap and started attacking him from all four sides. Jhala Manna went ahead and took away the royal insignia and crown from Rana Pratap's head and put on his head, while requesting him to leave the battlefield. This ruse worked, and Maharana pratap was saved. However, the enemies attacked Jhala Manna thinking he was Rana Pratap, and Jhala Manna was killed after putting up a fierce fight.

Jhala Manna died fighting but not before he had forced the Mughal army to back off to the east. It is because of this sacrifice that Rana Pratap continued to fight on against the enemies and eventually could liberate all of Mewar except Chittor. Thus, in this fierce battle of Haldighati, Sardar Jhala Manna fought as a great warrior and rescued his king by taking his crown. His descendants in Udaipur still proudly carry the emblem of Mewar as their coat of arms.

Jhala Manna is remembered for the ultimate sacrifice he made for his king, and the bravery with which he fought. He is also remembered as someone who kept his wits in a crisis and could show his presence of mind even while surrounded with enemies and fighting for life. Such inspiring stories leave a blazing trail in the history of our country. Jhala Manna is a shining example of bravery, loyalty, valour and sacrifice.

The Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Jhala Manna.

Credits:-

Text	:	Based on the material received from proponent
Stamp / FDC / Brochure / Cancellation Cachet	:	Smt. Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

झाला मन्ना
JHALA MANNA



विवरणिका
BROCHURE

झाला मन्ना

झाला मानसिंह (झाला मन्ना) बड़ी सादड़ी के मेवाड़ के राजपूत वंश के राज-परिवार में से थे। बड़ी सादड़ी जागीर महाराणा रायमल द्वारा झाला मन्ना के पूर्वजों श्री अज्जा और श्री सज्जा को दी गई थी। बड़ी सादड़ी के झालाओं को संकट की हर घड़ी में राजकुमार की सेवा में रहने का गौरव हासिल रहा।

हल्दीघाटी के युद्ध से पूर्व, झाला मन्ना ने गोगुंदा में (1576) महाराणा प्रताप सिंह की युद्ध-परिषद में हिस्सा लिया। जब चेतक युद्ध में घायल हो गया और महाराणा प्रताप भी गंभीर रूप से जख्मी हो गए, तो उन्हें युद्धभूमि से बाहर जाना पड़ा, उस समय झाला मन्ना ने महाराणा का कवच पहना और मेवाड़ के सैन्यदल का नेतृत्व किया। वे उस युद्ध में लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त हुए।

युद्ध में 'सलीम' (बाद में जहांगीर) पर राणा प्रताप के आक्रमण को देखकर, मुगल फौज के बहुत से सिपाहियों ने महाराणा प्रताप को चारों तरफ से घेर लिया और चारों ओर से उन पर आक्रमण करने लगे। झाला मन्ना आगे बढ़े और उन्होंने राणा प्रताप के सिर से राज-चिह्न और मुकुट लेकर अपने सिर पर धारण कर लिया और उनसे युद्धभूमि छोड़कर जाने का अनुरोध किया। इस युक्ति ने काम किया और महाराणा प्रताप के प्राण बच गए। तथापि, शत्रुओं ने झाला मन्ना को राणा प्रताप समझ कर उन पर आक्रमण कर दिया और झाला मन्ना भीषण युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

झाला मन्ना युद्ध करते-करते मारे गए किन्तु मरने से पूर्व उन्होंने मुगल सेना को पूर्व दिशा में पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया। इस बलिदान के कारण ही राणा प्रताप शत्रुओं के विरूद्ध लड़ाई लड़ते रहे और अंततः उन्होंने चित्तौड़ को छोड़कर पूरे मेवाड़ को स्वतंत्र करा लिया। इस प्रकार हल्दीघाटी के इस भीषण युद्ध में सरदार झाला मन्ना एक महान योद्धा की तरह लड़े और उन्होंने युद्ध के दौरान अपने राजा के 'मुकुट' को अपने सिर पर धारण कर अपने राजा को बचा लिया। अभी भी उदयपुर में उनके वंशज अपने कुलचिह्न के रूप में बड़े गर्व से मेवाड़ का राजचिह्न धारण करते हैं।

झाला मन्ना को अपने राजा के लिए किए गए अद्वितीय बलिदान और युद्ध में दिखाई गई वीरता के लिए याद किया जाता है। उन्हें ऐसे महापुरूष के रूप में भी याद किया जाता है जिन्होंने घोर संकट के समय में भी अपनी बुद्धिमता का परिचय दिया और शत्रुओं से घिरे होने तथा अपने प्राण खतरे में होने के बावजूद अपनी सूझ-बूझ का परिचय दिया। ऐसी प्रेरणादायी कहानियां हमारे देश के इतिहास में अमिट छाप छोड़ती हैं। झाला मन्ना बहादुरी, स्वामिभक्ति, वीरता और बलिदान के एक दैदीप्यमान उदाहरण हैं।

डाक विभाग झाला मन्ना पर स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/
विवरणिका/विरूपण : श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	5.0 लाख
Stamps Printed	:	0.5 million
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00